Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

6. अमृतलाल नागर की दृष्टि में तुलसीदास का जीवन-संघर्ष
(संदर्भ: मानस का हंस)

विजय कुमार
शोधार्थी (पीएच. डी.)
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय
मुजफ्फरपुर, बिहार
मो. 8271028303

सारांश

गोस्वामी तुलसीदास की काव्य रचना श्रीराम चरित मानस हिंदू सांस्कृतिक-धार्मिक प्रतीक के रूप में लोकमानस में जितकी गहरी पैठ बनायी, उतनी सफलता वाल्मीकिरचित रामायण को नहीं मिली। जनमानस की भाषा में गोस्वामी तुलसीदास को इसे धरातल पर उतारने में असीम संघर्ष करना पड़ा। तुलसीदास के जीवन-संघर्ष पर केंद्रित रघुवर दास, बेणीमाधव, कृष्णदत्त मिश्र, अविनाथ राय और संत तुलसी के लिखे गोसाई जी के पांच जीवनचरित हैं। पर, इसे कई विद्वान प्रामाणिक नहीं मानते। अमृतलाल नागर के अनुसार 'कवितावली' 'हनुमान बाहुक' और 'विनय पत्रिका' आदि रचनाओं में तुलसी के जीवन-संघर्ष की झलक मिलती है। किवदंतियों में भी कई चीजें तुलसीदास की रचनाओं से मेल खाता है। तुलसीदास के जीवन-संघर्ष को केंद्र में रखकर ''मानस का हंस'' उपन्यास में अमृतलाल नागर ने उन दस्तावेजों को प्रामाणिक आयाम देने के लिए इस्तेमाल किया है। संत बेनीमाधव के ''गोसाईचरित'' का संदर्भ तुलसीदास के अंतः संघर्ष और मनोव्यक्तित्व की संरचना के निर्माण में इस्तेमाल किया है। उपन्यास में संत बेनीमाधव को जीवनचरित लेखक के पात्र के तौर पर भी इस्तेमाल किया। साथ ही एक वेश्या के असफल प्रेम का आधार तुलसी के दोहे तन तरफत तुव मिलन बिन को बना कर मोहिनी नामक काल्पनिक चरित्र भी गढ़ा है। तुलसीदास के जीवन-संघर्ष के प्रत्येक क्षण को भावपूर्ण प्रसंगों में निरूपित किया है।

मुख्य शब्द- तुलसीदास का संघर्ष, अपशकुन, दरिद्रता, वर्णाश्रम, स्त्री मोह, पांडित्य, ईर्ष्या, षडयंत्र, साहित्य

शोध का उद्देश्य

1. अमृतलाल नागर के उपन्यास 'मानस का हंस' को केंद्र में रख कर तुलसीदास का जीवन-संघर्ष बताना
2. अमृतलाल नागर के उपन्यास 'मानस का हंस' को केंद्र में रख कर तुलसीदास के जीवन पर वर्णाश्रम के प्रभाव को बताना
3. अमृतलाल नागर के उपन्यास 'मानस का हंस' को केंद्र में रख कर दरिद्रता और आजीविका के बीच संघर्ष बताना
4. अमृतलाल नागर के उपन्यास 'मानस का हंस' को केंद्र में रख कर स्त्री आकर्षण और जीवन लक्ष्य को बताना

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोधपत्र में गोस्वामी तुलसीदास के जीवन-संघर्ष की विवेचना अमृतलाल नागर रचित ''मानस का हंस'' पुस्तक को केंद्र में रखकर ऐतिहासिक विधि, विश्लेषण एवं विवेचन विधि का प्रयोग कर की गयी है।

विवेचना

''रामचरितमानस'' गोस्वामी तुलसीदास के बौद्धिक तप की परिणति है; तो उनका जीवन-संघर्ष महातप। जीवन की शुरुआत से लेकर अंत काल तक प्रतिक्षण तुलसीदास संघर्षों से जूझते हैं। उनके जीवन-संघर्ष को हृदयस्पर्शी शब्दों में अमृतलाल नागर ने ''मानस का हंस'' में दर्शाया है।

साहित्यकार गोपाल राय के शब्दों में, श्उपन्यास खोलते ही पाठक अपने को एक अत्यंत सजीव दृश्य के समक्ष पाता है। इसके बाद दृश्य पर दृश्य निर्मित होते चले जाते हैं।1 तुलसीदास के जीवन चरित स्व० रांगेय राघव के औपचारिक शिल्प ''रत्ना की बात'' के बाद अमृतलाल नागर ने ''मानस का हंस'' के रूप में विशिष्ट संस्मरणात्मक प्रामाणिक जीवन-संघर्ष को उपन्यास में ढालने की सफल कोशिश की है।

तुलसीदास का संपूर्ण जीवन पीड़ा, वेदना, तिरस्कार, उपहास आदि जीवन के प्रत्येक आयाम को समेटे हैं। जन्म से अपशकुन, दरिद्रता में परिवरिश, वेद-वेदांग की शिक्षा, गृहस्थी का भार, मध्यकालीन समाज, पांडित्य ईष्र्या, लांछन, धूर्तता सब उनके जीवन का अंग बने। स्मृतियों से संवाद के क्रम में वे एक जगह कहते भी हैं-

'राम-राम राम राम रटते ही मैंने दुखों के पहाड़ ढकेले हैं। अपना पराया देखता हूँ तो मन अवश्य ही भर उठता है। पर उस कोमलता में भी मेरी सहनशक्ति राम के सारे ही अडिग बनी रहती है।'' [2]

साहित्यकार रामस्वरुप चतुर्वेदी ने भी लिखा है-''जीवन के तमाम सारे छद्म। *छल-फरेब, पाखंडों का एक जमघट धूर्तता कुटिलता के कार्य व्यापार, एक ऐसा समाज जिसमें ठग हैं, व्यभिचारी हैं, झूठे और बेईमान हैं, लम्पटता है। काशी के धर्म के पाखंड तथा कदाचार चोर, उचक्के, बटमार सब उन्हें मिलते हैं। धर्म के ध्वजावाहकों का असली चेहरा उनकी आंखों के सामने आता है। पाप, दुष्कर्म, अकाल, महामारी, दारिद्रय का एक पूरा संसार उनके समय उद्घाटित होता है। चापलूसी, स्वार्थ, मानवीय सामाजिक, पारिवारिक नाते-रिश्तों का क्षय उन्हें भीतर से हिला देता है।''* [3]

तुलसीदास के जीवन में संघर्ष की शुरुआत जन्म से होती है। मुगलों के गांव पर कहर बरपाने और तुलसीदास के जन्मते ही माता हुलसी की मृत्यु, साथ ही अभुक्त मूल नक्षत्र का बालक पर प्रभाव, ये कारण रहे कि पिता सरयूपारीण ब्राह्मण आत्माराम दुबे ने उन्हें त्यागने का निर्णय ले लिया। दासी मुनिया ने बालक को अपनी भिखारिन सास पार्वती अम्मा के हवाले कर दिया। पाँच वर्ष तक पार्वती अम्मा की वात्सल्यता में रामबोला की सहनशक्ति और रामभक्ति की जीवटता गहराती गयी। शरणदायिणी पार्वती अम्मा के रामबोला से लेकर गोस्वामी बनने तक तुलसीदास का जीवन अंतः व बाह्य आघातों में कुंदन की तरह तपता रहा। जीवन-संघर्ष की उस अमृत गाथा को अमृत लाल नागर के 'मानस का हंस' में प्रस्तुति सजीव बन पड़ी है।

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

जन्मते ही पिता द्वारा अपशकुन कहकर मुनिया दासी के हाथों फंेकवाने की टीस गोस्वामी तुलसीदास के मुख से कई मौकों पर उलाहने के रूप में बाहर निकलती है। कथा की शुरुआत में ही रत्नावली के ब्रह्मलोक पधारने और लोक परंपरा निबाहने के बाद 'घर' के बाबत सवाल किये जाने पर गोस्वामी तुलसीदास अपने मित्र राजा भगत से कहते हैं- *'घर घरौतिन के साथ गया। गाँव तुम्हारे नाम से बजता है और रही जन्मभूमि, वह तो सुकर खेत में है भाई, यहीं से कुटिल कीट की तरह माता-पिता ने जन्मते ही निकाल फेंका था।'* [4]

तुलसीदास पार्वती अम्मा को आदि गुरु मानते हैं। राजा भगत से संवाद के क्रम में वे कहते हैं- *'शंकर भगवान ने मुझे जिलाए रखने के लिए ही जगदम्बा पार्वती को भिखारिन बनाकर भेज दिया था। दरिद्रता में उतना वैभव, दुर्बलता में इतनी शक्ति और कुरूपता में इतनी सुन्दरता मैंने पार्वती अम्मा के अतिरिक्त औरों में प्रायः कम ही देखी है।'* [5]

घोर-अभाव और संकटों से गुजरते तुलसीदास का प्रारंभिक जीवन गुजरा। दर-दर भीख मांग बचपना बीता। भूख की ज्वाला में उच्च जाति, कुल, मर्यादा, धर्म का भेद जैसे स्वाहा हो गया।

अमृतलाल नागर के 'मानस का हंस' की शुरुआत मृत्युशय्या पर लेटी रत्नावली के प्रसंग से करते हैं और अंत गोस्वामी तुलसीदास के निधन से। बीच की कथावस्तु तुलसीदास के साथ, तो कभी उनकी स्मृतियों में, तो कभी मित्र संत बेनीमाधव के प्रश्नों के जवाब देते हुए हैं।

घास-फूस और ढाक के पत्तों से बना घर आँधी-तूफान में गिर पड़ा है। इसके नीचे दबी पार्वती अम्मा को बचाने की जेद्दोजेहद को अमृतलाल नागर के संवाद शब्दों ने तुलसीदास के बाल्यकाल के विपदा से संघर्ष को जीवंत कर दिया है। पार्वती अम्मा को बचाने की श्रम साधना और विकलता में हनुमान जी से गुहार काफी वेदनापूर्ण है।

''तब हम अब का करी? हमारे पेट भुखान है। हम नान्हें से तो हैं हनुमान स्वामी। अब हम थक गये भाई। अब हम अपनी पार्वती अम्मा के लगे जायके पौढ़ेंगे। देउ बरसे तो बरसा करें। हम क्या करें बजरंगबली, तुम्हें बताओ। तुमसे बने भाई तो राम जी के दरबार में हमारी गुहार लगाय आओ, औ न बने तो तुम्ई अपनी अम्मां के लगे जायके पौढ़ी'' 6

अमृतलाल नागर के अनुसार रामबोला नाम भी पार्वती अम्मा का दिया है। अयोध्या में उपनयन संस्कार के दौरान माथे पर तुलसी की पत्ती चिपका देख नरहरि बाबा ने उनका नाम तुलसीदास रख दिया। काशी में शेष सनातन जी के सानिध्य में शिक्षा प्राप्त की। पार्वती अम्मा ने ही महात्मा सूरदास, कबीरदास और मीराबाई आदि के भजन याद कराये। भिक्षा से लेकर राम के अरदास और काव्य रचना के कालक्रम में आजीविका की यह कलापूंजी अनवरत बनी रहीे। एक ब्राह्मण परिवार का पूत भीख मांगे, यह उलाहना उनके बालमन को कचोटती थी। पार्वती अम्मा की मृत्यु के आखिरी क्षणों में यह कटु अनुभव और गहराया।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उस काल की परिस्थिति पर टिप्पणी करते हुए कहा कि ''तुलसीदास का संघर्ष ऐसे समाज में था, जिस समाज में धन की मर्यादा बढ़ रही थी। दरिद्रता हिंसा का लक्षण समझी जाती थी। पंडितों और ज्ञानियों का समाज के साथ कोई संपर्क नहीं था।'' [7]

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

दरिद्रता के कारण तुलसीदास को किस तरह नीच समझा जाता है, 'मानस के हंस' में अमृतलाल नागर ने एक प्रसंग में सजीव किया है। शिशु भिक्षु तुलसीदास जब भिक्षा के लिए एक दरवाजे पर बार-बार गीत *'हम भक्तन के भक्त हमारे। सुन अर्जुन परतिज्ञा मेरी यह व्रत टरत न टारे। टरत न टारे. टरत व टारे-हे-रे' गाकर भीख की गुहार लगाता है, तो गृहस्वामिनी झल्लाती हुई घर से बाहर निकलते कहती हंै- मुंह जला हमारी ही देहरी में टें टें करत है जब देखौ तो...। भवानियौ नहीं खात हैं ई दहिजार का, ले मर।*[8]

'एक और घटनाक्रम में एक पिता को अपने बच्चों के साथ भिखारी रामबोला के साथ खेलना गंवारा नहीं होता। नीच जाति का कहकर मारा पीटा भी जाता है। रामबोला की झांंेपड़ी उजाड़ दी जाती है। यही से सूकर खेत पहुंचने के बाद घाघरा और सरयू के पावन स्थल पर महावीर मंदिर के चढ़ावे और प्रसाद प्राप्ति के लिए बंदरों और दूसरे भिखारियों से उनका संघर्ष होता है। राम से प्रीति में उनकी आजीविका कथा वाचन और भजन अंतकाल तक रहा। शेष सनातन जी महाराज के आश्रम में उनका संघर्ष 'भय' से हुआ। गुरुभाई की चुनौती को स्वीकार कर अमावस्या की रात हरिश्चन्द घाट के मंदिर जाने का प्रण करते हैं। बालक तुलसीदास भयमारक मंत्र के रूप में हनुमान चालीसा 'जै हनुमान ज्ञान गुन सागर। जै कपीस तिहुँ लोक उजागर 'पहला लंबा काव्य रचते है।

तुलसीदास की विद्वता और कथावाचन शैली की प्रसिद्धि जहाँ कहीं भी पहुंचती है। भद्रजनों की ईर्ष्या से उनका संघर्ष होता है। एक पल तो ऐसा भी आता है, जब कथा वाचन के दौरान श्रद्धालुओं के बीच से षडयंत्रकारियों की सिखायी स्त्री तुलसीदास पर लांछन लगाती है। कथा में विघ्न पड़ने पर तुलसीदास को सफाई देनी पड़ती है।

'सज्जनों, मैं आठों पहर आपकी दृष्टि में रहता हूँ। यहाँ के बाद मेरा अधिक समय जन्मभूमि के पास बैठे ही बीतता है। जिसको शंका हो, वह कहीं भी किसी भी समय परीक्षा ले सकता है।'[9]

तुलसीदास से ईष्र्या रखने वाले पंडितों की टोली के वैदेहीशरणवल्लभचरणकमलधूलिदास कहते भी हंै-यह तो हमारी जीविका कमावने की नीति है। इसका वास्तौ में दुश्चरित्रता से तनिक भी संबंध नहीं है। वैदेरीवल्लभ ने इनकी रचना चोरी की साजिश की। इस वास्ते जो चोर भेजे, उस पर बंदरों ने हमला कर दिया।

स्त्री आकर्षण और तुलसीदास का अंतःसंघर्ष अमृतलाल नागर के 'मानस का हंस' में बड़ी चतुराई से दृश्यवान है। एकतरफ काया और माया के चक्र में कैसे तुलसीदास अंतकाल तक इससे विरक्ति की राम रट के व्यवसाय में लगे रहते हैं। मेघा भगत के यहाँ 'मोहिनी' की सुर पाश में जकड़े जाते हैं। तो भक्तिनों के बीच आकर्षित स्त्रियों की कामुक निगाहों और विवाह पश्चात रत्नाबाई का प्रेमाकर्षण उन्हें बाँधे रखता है। कोतवाल उस्मान के घर तुलसीदास का साक्षात्कार मोहिनी से होता है। तब वह अपना सर्वस्व उन्हें समर्पित करना चाहती है। कामसुधा मदमत्त होने पर भी तुलसीदास संयत रहते हैं। मोहिनी से तुलसीदास कहते हैं-

तुम अपनी अभिलाषाएं किसी और से पूर्ण करो मोहिनीबाई। मैं गुलाम हूं, तुम उस्मान खाँ की चाकर। हम दोनों अपने-अपने बंधनों से बंधे हैं। तुम मेरे लिए इस समय भले ही आकर्षणभरी हो, किन्तु तुम्हारे लिए अपने जीवन का श्रेष्ठतम

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

आकर्षणभाव छोड़ना मेरे वास्ते असंभव है। यदि मैं अपनी और तुम्हारी कायिक भूख के वश में होकर उसे इस समय भूल जाऊँ तो भविष्य में मैं उसके कारण निश्चय ही पछतावे में आकर तुमसे घृणा भी कर सकता हूं। यह अनुचित है। [10]

प्रेम अनुरक्त होने पर भी तुलसी अपने राम के सहारे इस बाधा को पार करने का दंभ भी भरते हंै। मोहिनी के धिक्कारने पर वे व्यंग करते हैं- 'महाश्मशान के सारे भूत मिलकर भी मेरे राम प्रेम को न खा सकें, तो तुम्हारा वासना प्रेरित शाप भला मेरा क्या बिगाड़ेगा। 'मृगनयनी के मोह का विषैला तीर किस कदर तुलसीदास के मनक्षेत्र में गृहयुद्ध करता है। इसका प्रतिबिम्ब उनकी उत्तरकांड की चैपाई में व्यक्त होता है।

श्री मद बक्र न कीन्ह केहि प्रभुता बधिर न काहि। मृगलोचनि के नैन सर को अस लाग न जाहि ।। 40 (20)

अर्थात, लक्ष्मी के मद में किसको टेढ़ा और प्रभुता ने किसको बहरा नहीं कर दिया ? ऐसा कौन है, जिसे मृगनयनी (स्त्री) के नेत्रबाण न लगे हो? [11]

मोहिनी के माहपाश का शमन करते-करते तुलसीदास का ग्राहस्थ जीवन में रत्नावली से सामना होता है। मित्र राजा भगत के माध्यम से पिता के मित्र दीनबंधु पाठक की पुत्री से दांपत्य सूत्र में बंध जाते हैं। कंचन वर्ण, आत्मतेज, समुधुर वाणी विदुषी रत्नावली से तुलसीदास की ऐसी आसक्ति जगी कि वे एक क्षण भी पत्नी से अलग नहीं रहना चाहते। कथा वाचन के क्रम में चम्मो सहुवाइन और राजकुंवरी जैसी स्त्रियों का सौंदर्य आकर्षण से तुलसीवास मानसिक संघर्ष करते हैं। नारी देह के प्रति आकर्षणभाव को तुलसीदास अपने राम भक्ति की राह में बड़ी बाधा मानते हैं। इसलिए जब मित्र राजा भगत विवाह की चर्चा करते हैं, तब खिन्न होकर तुलसीदास करते हैं -

'मैं नारी के आकर्षण से दूर रहना चाहता हूँ। पाठकजी मुझे गृहस्थी के बंधन से बांधना चाहते हैं। मैं नहीं बंधूँगा, नहीं बंधूँगा। राजा भगत भी तर्क देते हैं- 'तन की भी कुछ चाहते होती हैं भइया। भूखा अगर परोसी गयी थाली छोेड़कर जायेगा, तो भूख के मारे कहीं न कहीं मुंह मारेगा ही।12 हालांकि, तुलसीदास कहते हैं- राम कृपा से इस आकर्षण से दूर रहूँगा। स्त्री मोह से संघर्ष की परिणति के रूप में तुलसीदास के रामचरित मानस जैसे उत्कृष्ट काव्य की रचना का चित्रण अमृतलाल नागर ने 'मानस का हंस' के आदि से अंत तक किया है।

वह निरे चाम का लोभी है, जीव में राम का नहीं, रत्नावली के इस उलाहने से तुलसी के अहं को आघात पहुंचता है। ग्लानि भाव से भरे तुलसीदास खुद को धिक्कारते हैं। घर छोड़ अपने इष्ट राम की शरण पाने के लिए उतावली दौड़ लगाते हैं। जिस रत्ना की काया-माया से भाग तुलसीदास ''रामचरित मानस'' की रचना करते हैं। रचनाक्रम में उसकी स्मृति बिम्ब की तरह पीछा करती है।

स्मृतियों में रत्ना के गृहत्याग के उलाहने पर तुलसीदास कहते हैं- 'तुम्हें छोड़ा कहाँ प्रिये। रत्ना के प्रति मेरी रीझ ही तो राम भक्ति बनी। मैं अपनी राम रिझवार के लिए आज तक तुम्हारी ऋणी हूं। जब गृहस्थ था तब तुम रत्नावली थी और जब विरक्त हुझा, तब तुम्हीं मेरी रामरत्नावली बन गयी।

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

स्त्री उपेक्षा को लेकर ‘‘रामचरित मानस’’ के जिस चैपाई - प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्ही। मरजादा पुनि तुम्हरी कीन्ही।। ढोल गवांर सूद्र पसु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी ।।14 पर आज भी विवाद खड़े किये जाते हैं। ‘‘मानस का हंस’’ में अमृतलाल नागर ने इस विरोध को पंडित के स्वर में पंडित की वाणी से तीक्ष्ण प्रहार किया है। शब्दों के कुटिल वाण की व्यथा को रामू द्विवेदी से साझा भी करते हैं। यह सिद्ध करने की कोशिश की गयी कि विरक्त को सांसारिक कामनाओं और कामिनियों से मन मोड़ने के लिए उनकी उपेक्षा करनी ही पड़ती है।

गोस्वामी तुलसीदास खुद एक ब्राह्मण परिवार में जन्मे. परंतु समाज में जातियों के बीच व्याप्त विषमता में समभाव दृष्टि रखना उच्चवर्ग के ब्राह्मणों के बीच उन्हें कठघरे में खड़ा करता है। कई मौकों पर ब्राह्मण पंडितों की ईष्र्या उन्हें वर्णाश्रम धर्म के खिलाफ खड़ा करता है। आवेश में तुलसीदास कहते भी हंै-

‘धूत, अवधूत, राजपूत, जुलाहा जिसके मन में आए जी भर करे, मुझे न किसी की बेटी से अपना बेटा ब्याहना है और न किसी की जात ही बिगाड़नी है। तुलसी अपने राम का सरनाम गुलाम है, बाकी और जो जिसके मन में आए कहता फिरे।’[15]

डॉ रामविलास शर्मा ने भी लिखा है- ‘जो लोग समझते हैं कि गोस्वामी तुलसीदास शूद्रों पर ब्राह्मणों के प्रभाव का समर्थन करते हैं, वे भूल जाते हैं कि उन्होंने स्वयं इस प्रभाव का कटु अनुभव किया था। ‘‘कवितावली’’ के इन छंदों में महाकवि का एक निडर व्यक्तित्व हमारे सामने उभर कर बाता है जो रामभक्ति का प्रचार करता हुआ वर्णवादियों के विरोध की जरा भी परवाह नहीं करता। समूचा तुलसी साहित्य इस चित्र की सत्यत्ता प्रमाणित करता है। वर्ण और जाति की व्यवस्था को चुनौती देता हुआ तुलसी का व्यंग्यस्वर सुनिए-

कौन धौं सोमयागी अजामिल अधम कौन गजराज धौं बाजपेयी।[16]

जाति का दंश तुलसीदास का हर जगह पीछा करता है। अस्सी घाट पर उनके निंदक उपहास का एक भी मौका नहीं छोड़ते। कभी तो उन्हें ब्राह्मण होने पर संदेह किया जाता, तो कभी ब्रह्म हत्यारे का पैर धोने पर लांछन लगाया जाता। एक जगह वे छद्मनिंदकों और प्रशंसकों की भीड़ से कहते हैं-

‘‘भाई अब इस प्रश्न को समाप्त कीजिए। समझ लीजिए कि न तो मेरी जाति-पांति है और न मैं किसी की जाति-पांति से कोई प्रयोजन ही रखना चाहता हूँ। न मैं किसी के काम का हूं और न मेरे कोई काम का है।’’17

तुलसीदास वर्णाश्रम धर्म को मानते थे पर एक जगह वह ये भी कहते हैं-दीन-दुर्बल और रोगी की सेवा करना राम की सेवा करना ही है। गोत्र के सवाल पर वे करते हैं- इत्ती सी बात भी नहीं जानते कि गुलाम का गोत्र भी वही होता है, जो उसके साहब का होता है।

वर्णाश्रम पर तुलसी के प्रत्युतर पर जगदीश शर्मा लिखते हैं- ‘‘तुलसीदास ने अपने समकालीन शासकों के अकड़ के समान ही अपने विषय में फैलाये जा रहे प्रवाद की अनदेखी नहीं की। उससे आहत होकर खीझ भरे शब्दों में अपना आक्रोश व्यक्त किया। उनके जाति के संबंध में तरह-तरह की बातें फैलानेवालों को उन्होंने झिड़क दिया है।’’18

Year-6 Volume: I, January-March, 2024 Issue-21 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

तुलसीदास न्याय के पक्षधर थे। नीति-अनीति को उन्होंने खुली आंखों से देखा था, कटु अनुभव किया था। जहाँ कहीं देखा। अपना मंतव्य जरूर रखा। उन्होंने ब्राह्मणों की पथभ्रष्टता को लेकर निंदा भी की। ब्रह्म हत्यारा की व्यथा सुनकर उसके कृत्य को जायज ठहराया। कहा-जन्म से ब्राह्मण होते हुए भी कर्म से अधम था। तुम्हारी जगह कोई और होता तो वह भी आवेश में ऐसा काम कर सकता था। मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने भी ब्राह्मण को मारा था। असुरधर्मी अपना वर्ण खो देता है।

निष्कर्ष

अपनी आदि गुरु पार्वती अम्मा की विपत्ति काल में हनुमान गोसाई को याद करने की प्रेरणा, नरहरि बाबा की छत्रछाया और शेष सनातन महाराज से वेद-वेदांग में प्रवीणता, स्त्री मोह की अनुरक्ति विरक्ति, वर्णाश्रम का दुष्प्रभाव, देशकाल में मुगलों का अत्याचार रामबोला को गोस्वामी तुलसीदास बना गया। जीवन की अनुभूतियों का उनकी रचनाओं 'रामचरित मानस', 'विनयपत्रिका', 'कवितावली' और 'दोहावली' में स्पष्ट प्रभाव दिखता है। 'मानस का हंस' में अमृतलाल नागर ने अपनी किस्सागोई लेखनी में उसे सजीव बनाया है।

संदर्भ

1. हिन्दी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या-228
2. मानस का हंस, अमृतलाल नागर, पृष्ठ संख्या-47
3. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी, पृष्ठ संख्या-216
4. मानस का हंस, अमृतलाल नागर, पृष्ठ संख्या-19
5. मानस का हंस, अमृतलाल नागर, पृष्ठ संख्या-51
6. मानस का हंस, अमृतलाल नागर, पृष्ठ संख्या-47
7. हिन्दी साहित्य की भूमिका, हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ संख्या-98
8. मानस का हंस, अमृतलाल नागर, पृष्ठ संख्या-49
9. मानस का हंस, अमृतलाल नागर, पृष्ठ संख्या-294
10. मानस का हंस, अमृतलाल नागर, पृष्ठ संख्या-152
11. रामचरित मानस, उत्तरकांड, दोहा संख्या-70-ख
12. मानस का हंस, अमृतलाल नागर, पृष्ठ संख्या-199
13. मानस का हंस, अमृतलाल नागर, पृष्ठ संख्या-215

The Asian Thinker

14. रामचरित मानस, सुंदरकांड, दोहा संख्या 58(3)

15. मानस का हंस, अमृतलाल नागर, पृष्ठ संख्या-329

16. निबंधों की दुनिया, डॉ रामिवलास शमार्, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या-133

17. मानस का हंस, अमृतलाल नागर, पृष्ठ संख्या-333

18. गोस्वामी तुलसीदास आधुनिक संदर्भ में, जगदीश शर्मा, राजस्थानी साहित्य संस्थान, जोधपुर प्रथम संस्मरण, 1995 पृष्ठ संख्या-25

The Asian Thinker